

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 3, 2 कुरिन्थियों 2, पॉल का बचाव

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3, 2 कुरिन्थियों 2, पॉल का बचाव है।

इस सत्र में, हम 2 कुरिन्थियों अध्याय दो की जाँच करेंगे।

अनुशासन या दुर्व्यवहार? आज हम अनुशासन के बारे में बात करते हैं, और हम दुर्व्यवहार के बारे में भी बात करते हैं। और जाहिर है, हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब अनुशासन शब्द न केवल विभिन्न प्रकार की छवियों को जन्म देता है, बल्कि विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं भी उत्पन्न करता है। इसे न केवल नापसंद किया जाता है, बल्कि घर पर भी इसे नापसंद किया जाता है, और इसे हमेशा पुराना माना जाता है।

इसलिए, हम ऐसा समाज चाहते हैं जो वह करने में सक्षम हो जो वे करना चाहते हैं, जो भी वे करना चाहते हैं। हाँ, हम समझते हैं कि कुछ अनुशासन दुर्व्यवहार की सीमा पर हैं, लेकिन फिर अनुशासन एक ऐसी चीज़ है जो चर्च में गायब है। फिर भी यह माता-पिता-बच्चे के रिश्ते में प्रमुख चीज़ों में से एक है और पादरी-मण्डली के रिश्ते में प्रमुख चीज़ों में से एक है।

क्योंकि जहाँ अनुशासन नहीं होता, वहाँ चीज़ें टूट जाती हैं। फिर, लोग अपनी मर्जी से काम करने में सक्षम हो जाते हैं। फिर हमारे पास जो है वह कुरिन्थ की तरह है, जहाँ हर कोई वही करता है जो उसकी नज़र में सही है, जॉर्जिस की किताब के अंत की तरह।

चर्च को अनुशासित करने की आवश्यकता के बारे में पॉल के दिल में बहुत पीड़ा थी। इसलिए, मुझसे शुरू करें। आइए 2 कुरिन्थियों, अध्याय दो को देखें, और इसे पहली आयत से देखें। इसलिए, मैंने आपको एक और दर्दनाक यात्रा नहीं करवाने का मन बना लिया।

क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुःख पहुँचाऊँ, तो मुझे कौन आनन्दित करेगा, केवल उसी को जिसे मैंने दुःख पहुँचाया है? और मैंने यह इसलिये लिखा कि जब मैं आऊँ, तो मुझे उनसे दुःख न सहना पड़े जो मुझे आनन्दित करने वाले थे, क्योंकि मैं तुम सब के विषय में यह विश्वास रखता हूँ कि मेरा आनन्द तुम सब का आनन्द होगा। क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत दुःख और मन की वेदना और बहुत से आँसू बहा-बहाकर लिखा है, न कि तुम्हें दुःख पहुँचाने के लिये, परन्तु यह जताने के लिये कि मैं तुम्हारे लिये कितना प्रेम रखता हूँ।

अब, इसे संदर्भ में रखने के लिए, हमारे पिछले सत्र में, हमने उन कारणों को दिखाया कि क्यों पॉल और कुरिन्थियों के बीच संबंध टूट गए थे। मुद्दों में से एक पॉल की उनके पास यात्रा को रद्द करना था। पॉल की योजनाबद्ध और वास्तविक यात्रा कार्यक्रम का मामला बहुत जटिल है, लेकिन इसका कारण नहीं है।

यह कुरिन्थियों और खुद को उस दर्द से बचाने के लिए था कि उसने तथाकथित दर्दनाक यात्रा के बाद इफिसुस से कुरिन्थ लौटने से परहेज किया। पद एक को देखें। इसलिए, मैंने आपको एक और दर्दनाक यात्रा नहीं करने का मन बना लिया।

पॉल ने उनसे मुलाकात की, लेकिन यह मुलाकात अच्छी तरह से समाप्त नहीं हुई। यह दर्दनाक था। इसलिए पॉल अपनी योजना में बदलाव का बचाव करना जारी रखता है, और फिर वह एक और कारण बताता है कि वह उनके पास उस तरह क्यों नहीं आया जैसा कि इरादा था।

पद दो में हम देखते हैं कि एक और यात्रा से बहुत परेशानी पैदा हो सकती थी क्योंकि कुरिन्थ के लोग अभी भी विद्रोही थे। ऐसे लोग थे जो अभी भी पौलुस का विरोध कर रहे थे, और पौलुस को कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई करनी पड़ती। और समस्या का समाधान करने के बजाय, यह वास्तव में इसे और बढ़ा देता।

और इसलिए, पॉल ने कहा, ठीक है, मुझे इंतज़ार करने दो। मुझे जाने मत दो। इस तरह, पॉल तब तक कुरिन्थ जाने को तैयार नहीं था जब तक कि उन्होंने अपना रवैया नहीं बदल दिया।

यह बुद्धिमानी है। उनके पास न जाना उनकी निजी रुचि का मामला नहीं था। उन्होंने यह निश्चय किया कि वे फिर कभी दुःख में नहीं आएंगे और अपने उन मित्रों को दुःख नहीं देंगे जो उन्हें खुश करते हैं।

यहीं पर आप ईसाई धर्म की गतिशीलता को देख सकते हैं। पॉल कहते हैं कि तुम ही हो जो मुझे खुश करते हो। मेरा मतलब है, यह जॉन के शब्दों को प्रतिध्वनित करता है जब वह कहता है, मेरे लिए इससे बड़ी कोई खुशी नहीं कि मेरे बच्चे सच्चाई में बने रहें।

एक पादरी और एक मंत्री के रूप में, जब आप उन लोगों को देखते हैं जो नेतृत्व कर रहे हैं, समृद्ध हो रहे हैं और अच्छा कर रहे हैं, तो आपको खुशी मिलती है। अगर वे दुखी हो जाते हैं, तो और कौन पॉल को खुश कर सकता है? उनका आनंद उसका आनंद था। उसका दर्द उनका दर्द था।

इसलिए, पौलुस ने एक पत्र लिखा, पिछला पत्र। अब, यह 1 कुरिन्थियों का पत्र नहीं है, और यह 1 कुरिन्थियों 5-9 में वर्णित पत्र नहीं है, बल्कि एक और पत्र है, एक और दुःखद पत्र जिसमें बहुत दुःख और हृदय की पीड़ा है और बहुत से आँसू हैं, एक आँसू भरा पत्र। एक बात बहुत स्पष्ट है।

हर बात में, पौलुस को कुरिन्थियों के प्रति अपने प्रेम से प्रेरणा मिली। अब, इससे हमें कुछ बातें पता चलती हैं। पहली बात, जब हमें किसी बात पर दोस्तों से बहस करनी पड़ती है, तो हमें उनके प्रति अपने रवैये पर नियंत्रण रखना चाहिए।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जब हम किसी मुद्दे पर उनसे भिड़ें तो हमारी मानसिकता सही हो। यह महत्वपूर्ण है। पॉल कहते हैं कि मैं नहीं आना चाहता था क्योंकि अगर मैं आऊंगा, तो तुम दुखी हो जाओगे।

मुझे इस मुद्दे पर आपसे भिड़ना पड़ता, और मुझे नहीं लगता कि इस समय यह सही है। दूसरे शब्दों में, हम दूसरा सबक देखते हैं। टकराव हमारे लिए आसान नहीं होना चाहिए।

मेरा मतलब है, हमें टकराव नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें टकराव से भागना भी नहीं चाहिए। हम टकराव के इस अर्थ में नहीं हैं कि हम सही हैं या यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन जब टकराव की ज़रूरत होती है, तो आप देखते हैं कि टकराव शब्द में लगभग नकारात्मक निंदा है कि टकराव का मतलब लड़ाई है। नहीं, इसका मतलब यह नहीं है।

इसका मतलब है कि हम चीज़ों को सामने लाते हैं और कहते हैं, अरे, देखो, चलो इसे देखते हैं। यह हमारे लिए आसान नहीं होना चाहिए, और हमें निश्चित रूप से इसमें कोई खुशी नहीं लेनी चाहिए। फिर हम एक और सबक सीखेंगे।

अगर हमारा कोई प्रिय व्यक्ति दुख में है, तो हमारी आँखों में कम से कम सहानुभूति के आँसू तो होने ही चाहिए। यहाँ पॉल था। उसने कहा कि मैंने बहुत आँसू बहाते हुए तुम्हें पत्र लिखा है।

याद रखिए, यह कोई युवा व्यक्ति नहीं है। यह एक बूढ़ा व्यक्ति था। यह वास्तव में प्रेम है।

मेरा मतलब है, मुझे सहानुभूति के आँसू में जागना चाहिए। फिर, नंबर चार, यह आवश्यक हो सकता है कि हम आगे बढ़ें और अपने दोस्त को घायल करें क्योंकि पर्दा या बुराई को हटाने का कोई तरीका नहीं है। कभी-कभी, यह आवश्यक होता है, लेकिन घाव देने वाले दोस्त को भी दर्द महसूस करना चाहिए।

इसलिए, आप आनंद के लिए किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाते। हमें खुद भी दर्द महसूस करना चाहिए। इसलिए, वह कहते हैं, मैंने आपको कला के बहुत दुख और पीड़ा के कारण लिखा है।

मेरा मतलब है, बहुत तकलीफ़ में इस बारे में सोचो। उसने कहा कि बहुत दर्द में दिल, बहुत आँसू। मेरा मतलब है, पॉल की भाषा बहुत शक्तिशाली और बहुत ही स्पष्ट है, जिसमें बहुत सारे आँसू, बहुत दर्द, बहुत दुःख और दिल की पीड़ा है।

वह चौथी कविता में भी यही शब्द इस्तेमाल करता है, और फिर कहता है, मेरा मतलब है, यह आपको बताता है कि यह दिल में है। यह दिल में है। यह दर्द महसूस करता है।

ऐसा लगता है जैसे आपके दिल में खंजर चुभ रहा हो, लेकिन आपको यह करना ही होगा। वह उनसे इतना प्यार करता था। और पॉल उनसे कह रहा था, यही हो रहा है।

इसलिए, पौलुस ने उनसे दोबारा मिलने न जाने के अपने फैसले को स्वीकार किया क्योंकि वह उन्हें कष्ट नहीं देना चाहता था। उसने कहा कि कई परिस्थितियों के कारण, यह पत्र पीड़ा से पैदा हुआ और आँसू पैदा करता है। कई लोगों ने यह सुझाव देने की कोशिश की है कि 1 कुरिन्थियों 2, 2 कुरिन्थियों 6, आयत 14 से 7, 1 वह पत्र है, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता।

ऐसा नहीं है। कभी-कभी इसे दुख भरा पत्र मान लिया जाता है। जब हम वहां पहुंचेंगे तो हम इस पर फिर से विचार करेंगे।

ऐसे अन्य लोग भी हैं जो इस अंतर्वेशन को महसूस करते हैं, लेकिन चलिए हम अपने आप को आगे नहीं बढ़ाते। लेकिन जब आप अध्याय छह पर अगला वीडियो देखेंगे तो इसे ध्यान में रखें। आपको वहाँ और भी उत्तर मिलेंगे, लेकिन अभी के लिए सिर्फ आपको सचेत करने के लिए। लेकिन 2 कुरिन्थियों अध्याय दो में अब कुछ घटित होता है।

और यह भाग जो हम पढ़ने जा रहे हैं वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। 2 कुरिन्थियों अध्याय दो, पद संख्या पांच से 11। यहां हम एक अपराधी की स्थिति देखते हैं, लेकिन यदि किसी ने पीड़ा पहुंचाई है, तो उसने मुझे नहीं, बल्कि कुछ लोगों को, अतिशयोक्ति न करते हुए, आप सभी को पीड़ा पहुंचाई है।

ऐसे व्यक्ति के लिए बहुमत द्वारा दी गई यह सज़ा ही काफी है। इसलिए अब, इसके बजाय, आपको उसे माफ़ करना चाहिए और सांत्वना देनी चाहिए ताकि वह अत्यधिक दुःख से अभिभूत न हो। इसलिए, मैं आपसे उसके प्रति अपने प्यार की फिर से पुष्टि करने का आग्रह करता हूँ।

मैंने तुम्हें परखने के लिए लिखा है, ताकि जान सकूँ कि तुम हर बात में आज्ञाकारी हो या नहीं। जिस किसी को तुम क्षमा करते हो, मैं भी उसे क्षमा करता हूँ। मैंने जो कुछ क्षमा किया है, वह क्षमा किया है। अगर मैंने कुछ क्षमा किया है, तो वह मसीह की मौजूदगी में तुम्हारे लिए किया है।

और हम ऐसा इसलिए करते हैं ताकि हम शैतान के झांसे में न आ जाएँ, क्योंकि हम उसकी चालों से अनजान नहीं हैं। अब, आइए इस अंश को देखें। पिछले भाग में, पौलुस ने दर्द महसूस करने, दर्द पैदा करने और आगे दर्द से बचने के बारे में बात की थी।

ये तीनों बातें इसी अनुच्छेद में फिर से आती हैं। एक विशेष अपराधी है। आप देखिए, इस अनुच्छेद में पादरी के रूप में पॉल की संवेदनशीलता विशेष रूप से स्पष्ट है।

हमें इस बात का जिक्र करना चाहिए। एक पादरी के तौर पर पौलुस की संवेदनशीलता। आप इसे आयत 5 से 8 में देख सकते हैं। पौलुस संवेदनशील था।

वह मानते हैं कि ईसाई अनुशासन केवल प्रतिशोधात्मक नहीं है, बल्कि उपचारात्मक भी है। ईसाई अनुशासन प्रतिशोधात्मक नहीं है, बल्कि उपचारात्मक है। और यहाँ, हमें अनुशासन और सज़ा के बीच अंतर को तुरंत समझने की ज़रूरत है।

सज़ा से मुक्ति नहीं मिलती। अनुशासन से मुक्ति मिलती है। सज़ा देने वाले को सज़ा देना ही सज़ा है।

हम लोगों को सज़ा देते हैं, और बस यही सब खत्म हो जाता है। और कभी-कभी हम उन्हें सज़ा देते हैं, लेकिन वे नहीं बदलते। लेकिन अनुशासन मुक्तिदायक होता है।

ध्यान रखें कि अनुशासन शब्द लैटिन मूल शब्द डिसिपुलस से आया है, जिसका अर्थ है सीखने वाला, विद्यार्थी। यहीं से हमें अनुशासन मिलता है; यहीं से हमें अनुशासन मिलता है। अनुशासन का उद्देश्य यह है कि कोई व्यक्ति सीख सके, शायद विद्यार्थी हो, और हमारी इंद्रियों को आराम मिले।

तो, आप एक पादरी के रूप में पॉल की संवेदनशीलता को देख सकते हैं। नंबर एक, एक मिनट रुकिए। क्या आपने देखा कि पॉल ने अपराधी का नाम नहीं बताया? हो सकता है कि उसने बताया हो।

वह उस अपराधी को शर्मिंदा कर सकता था। बेशक, वे शायद उसे जानते हों। तो, आप कहते हैं, ठीक है, वे उसे जानते हैं। उसे नाम का उल्लेख करने की ज़रूरत नहीं है।

खैर, उनमें से कुछ शायद उसे नहीं जानते होंगे। लेकिन पॉल के मन में एक बड़ा लक्ष्य था। वह था उस अपराधी को वापस लाना।

और अगर जो लोग उसे नहीं जानते थे, उन्हें उसका नाम पता चल जाता है, तो वे उसे संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। मैं पॉल की सेवकाई में पादरी की संवेदनशीलता की बात कर रहा हूँ। वह संवेदनशील था।

वह जानता था कि यह व्यक्ति अभी भी मण्डली का हिस्सा बनने जा रहा था। अगर यह व्यक्ति मण्डली का हिस्सा बनने जा रहा था, तो उसे अनुशासित करने में भी, चीजें सही होनी चाहिए। आप जानते हैं क्या? पौलुस निश्चित रूप से पश्चाताप करने वाले अपराधी की भावनाओं और मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को समझता है।

आप इसे छंद छह से आठ में देख सकते हैं। बहुमत द्वारा दी गई यह सज़ा ऐसे व्यक्ति के लिए पर्याप्त है। इसलिए अब, इसके बजाय, आपको उसे माफ़ कर देना चाहिए और सांत्वना देनी चाहिए ताकि वह दुःख से अभिभूत न हो।

इसलिए, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप उसके प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करें। क्या मैं यह जल्दी से कह सकता हूँ? हाँ, यह आज चर्च में हमारे सामने आने वाली समस्याओं में से एक है। चर्च में पुनर्स्थापना का कोई मंत्रालय नहीं है।

ज़्यादातर चर्च, या अगर मैं इसे इस तरह से कहूँ, लोगों को अनुशासित करते हैं, और हम उन्हें फेंक देते हैं। हमें इस बात की परवाह नहीं है कि वे मसीह के पास वापस आते हैं या नहीं। हम उन्हें बस फेंक देते हैं।

लेकिन अगर आप इस बारे में सोचें, अगर आप इस बारे में उस कीमत के बारे में सोचें जो मसीह ने चुकाई, जो पीड़ाएँ उसने झेलीं, जो पीड़ा उसने झेली, और जो कुछ उसने इस एक व्यक्ति को अपने पास लाने के लिए किया, तो हम उस व्यक्ति को खोना नहीं चाहेंगे। जब वह व्यक्ति गलत भी होता है, तब भी हम अपना सर्वश्रेष्ठ करना चाहते हैं और उस व्यक्ति की भावनाओं और उस पश्चातापी गलत काम करने वाले की मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को समझना चाहते हैं क्योंकि यह

व्यक्ति पश्चातापी है। और वह क्या करता है? वह कुरिन्थियों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण के रूप में अपने आचरण की अपील करता है।

और वह समुदाय के भीतर शैतान के विभाजनकारी संचालन से अवगत है। और इसलिए, वह कहता है, हम नहीं चाहते कि शैतान इसका फ़ायदा उठाए। एक बड़ा सवाल जो हमेशा पूछा जाता रहा है, वह यह है कि यह अपराधी कौन है? अपराधी की पहचान क्या है? जितना संभव हो सके, मैं वास्तव में उस पर ज़्यादा देर तक बात नहीं करना चाहता, लेकिन मैं आपको कुछ ऐसी बातें बताता हूँ जिन पर बहस हुई है।

ज़्यादातर पुराने टिप्पणीकारों ने तर्क दिया है कि यह आदमी कौटुम्बिक व्यभिचार का दोषी है। लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। ऐसा नहीं है।

देखिए, कई कारणों से। मेरा मतलब है, क्योंकि जब आप 1 कुरिन्थियों 5 को देखते हैं, तो यह 2 कुरिन्थियों 2 जैसा नहीं है। जाहिर है, पॉल की दर्दनाक यात्रा के बाद, पॉल या उसके किसी प्रतिनिधि के खिलाफ किसी तरह का अपमान किया गया है। यह पॉल के खिलाफ एक व्यक्तिगत अपराध है।

यह अनाचार के मामले में कोई अपराध नहीं है। यह तब होता है जब किसी व्यक्ति, शायद किसी को, अनुशासित किया गया हो, और फिर चर्च के कुछ लोगों को लगता है कि पॉल बहुत कठोर हो रहा था। पॉल बहुत कठोर था, और यह मुश्किल था; इसलिए, उन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया।

तो, मण्डली में कुछ लोग पॉल के खिलाफ हैं। मुझे नहीं लगता कि यह अपराधी है क्योंकि इसके खिलाफ बहस करने के लिए बहुत सारे कारण हैं। जाहिर है, पॉल की दर्दनाक यात्रा के बाद, उनके या उनके प्रतिनिधियों में से किसी के खिलाफ अपमान या कुछ वर्णन किया गया है, या तो कुरिन्थ के किसी आगंतुक या किसी कुरिन्थियन द्वारा।

और यह मूल रूप से वही तर्क है जो सी.के. बैरेट ने अपनी पुस्तक में दिया है, जो शायद उस समय चर्च में पॉल के विरोध का नेतृत्व कर रहे थे क्योंकि आप बाद में देखेंगे कि कुरिन्थ के चर्च में पॉल के बहुत से विरोधी थे, और उस व्यक्ति को अनुशासित किया जाना था। इसलिए, पॉल दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण होने वाले दुख को कम आंकते हैं। पॉल कहते हैं, अगर मैं उस व्यक्ति को माफ़ करने के लिए तैयार हूँ, तो आपको भी तैयार होना चाहिए।

तो, आप जानते हैं, निश्चित रूप से, यह सिर्फ़ अनाचार या उसके आस-पास का मामला नहीं था। इसलिए, पॉल अपना ध्यान बदल देता है। वह मण्डली में उस व्यक्ति को संबोधित करता है जिसने सुना है और न केवल पॉल को दुःख कहा है, बल्कि विस्तार से, पूरी मण्डली को दुःख कहा है।

हम जो सबसे अच्छा कह सकते हैं वह यह है: अपराध की प्रकृति निश्चित नहीं है। यह नंबर एक है। दूसरी बात जो हम कह सकते हैं वह यह है: अपराध, अपराध का प्रकार, संदर्भ में मायने नहीं रखता।

इस संदर्भ में हमारे लिए जो बात मायने रखती है वह यह है कि पॉल बहाली के बारे में क्या कह रहा है। इस व्यक्ति को लाने के बारे में पॉल क्या कह रहा है? और यहीं पर हम बहाली के रूप में पवित्रता के बारे में बात कर सकते हैं। बहाली के रूप में पवित्रता। यह काफी दिलचस्प है क्योंकि जब आप 2 कुरिन्थियों को देखते हैं, तो मेलमिलाप और बहाली पृष्ठों को भर देते हैं, और क्या यह सच नहीं है कि अगर आप मुझसे ईसाई धर्म की दो-शब्द परिभाषा देने के लिए कहें, तो यह सिर्फ मैं ही कहूँगा, मैं आपको बताऊँगा कि ईसाई धर्म मूल रूप से बहाल किए गए रिश्ते हैं।

बस यही सब कुछ है। रिश्तों को फिर से बहाल करना। आप जानते हैं कि ईडन गार्डन में क्या हुआ था।

रिश्ता टूट गया था, और परमेश्वर ने वही किया जो उसे करना था। मसीह क्यों आया? परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को फिर से बहाल करने के लिए। रिश्तों को फिर से बहाल किया।

इसलिए ईसाई धर्म सिर्फ न्यायपूर्ण नहीं हो सकता; यह आपकी चीज़ है। आप जो करना चाहते हैं, करें, बस जेरिको रोड पर; वहाँ सिर्फ दो लोगों के लिए जगह है, सिर्फ यीशु और मेरे लिए। मैं ऐसा नहीं मानता। अगर सिर्फ यीशु और मैं ही हैं, तो मुझे आपके लिए खेद है, फिर आप बाहर हैं।

लेकिन जेरिको का रास्ता न्यायपूर्ण नहीं है, और वहाँ दो से ज़्यादा लोगों के लिए जगह है। यह यीशु और मैं नहीं है, बल्कि यह यीशु और हम हैं। हाँ, मैं समझता हूँ।

ईसाई अनुभव, मुक्ति और पवित्रीकरण जैसे ईसाई अनुभव निश्चित रूप से व्यक्तिगत हैं, लेकिन वे व्यक्तिवादी नहीं हैं। यह समुदाय के संदर्भ में है। हम अपना जीवन समुदाय के संदर्भ में जीते हैं।

मैं कैसे जान सकता हूँ कि मेरे पास धैर्य है सिवाय समुदाय के संदर्भ में? मैं समुदाय के संदर्भ के अलावा सहनशीलता कैसे प्रदर्शित कर सकता हूँ? मैं अच्छाई कैसे प्रकट कर सकता हूँ? क्या यह समुदाय के संदर्भ के अलावा खुद के लिए है? मैं समुदाय के संदर्भ के अलावा अकेले खुद के साथ नम्रता या नम्रता कैसे प्रकट कर सकता हूँ? तो, ईसाई धर्म रिश्तों के बारे में है, और पॉल रिश्तों के बारे में है, और उसने कहा, देखो, कुछ हुआ है। एक रिश्ता टूट गया है। इस व्यक्ति को अनुशासित किया गया है, और इस रिश्ते को उस स्थिति में बहाल करने का समय आ गया है जहाँ यह था।

इसलिए भले ही हम अपराध के बारे में निश्चित नहीं हैं, लेकिन हम इस बारे में बहुत निश्चित हैं कि पॉल क्या करने की कोशिश कर रहा था। आप देखिए, पॉल के शब्दों से ऐसा लगता है कि उसे व्यक्तिगत रूप से ठेस पहुंची थी, शायद किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जिसने चर्च के सामने उसके प्रेरितिक अधिकार को खुलेआम चुनौती दी थी। पॉल ने पहले चर्च से कार्रवाई करने का आह्वान किया था, और उन्होंने ऐसा किया।

तीतुस की रिपोर्ट और पौलुस के वर्तमान पत्र दोनों संकेत देते हैं कि कलीसिया ने पौलुस के निर्देश के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त की है। अब, पद 6 में, वह कहता है, इसलिए अब इसके बजाय

तुम उसे क्षमा करो और सांत्वना दो ताकि वह दुःख से अभिभूत न हो, बल्कि इसके बजाय वे उसके प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करें। यह बहुत महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण है।

अब मैं यह कहना चाहता हूँ: जब पॉल कहता है कि उन्हें उसे माफ़ कर देना चाहिए, तो हम क्या सीखते हैं? चर्च को माफ़ी का स्थान होना चाहिए। अगर चर्च मसीह की माफ़ी को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता, तो हमने नैतिक और शास्त्रीय रूप से लोगों को माफ़ी का अनुभव करने के लिए चर्च आने के लिए आमंत्रित करने का हर अधिकार खो दिया है। अगर हम पश्चाताप करने वाले अपराधियों को माफ़ी नहीं दे सकते, तो हमें पवित्रता का अर्थ फिर से जाँचने की ज़रूरत है।

तो, यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। यह अंश महत्वपूर्ण है, और पॉल कहता है, मैंने आपको परखने के लिए यह कारण लिखा है, मेरा मतलब है कि आप अत्यधिक दुःख से अभिभूत न हों। इसलिए अब, इसके बजाय, आपको उसे क्षमा करना चाहिए और सांत्वना देनी चाहिए।

अब, आइए इसे थोड़ा और देखें। ये निर्देश उनकी आज्ञाकारिता की परीक्षा थे, और जैसा कि मैंने इस अध्याय के अपने परिचय की शुरुआत में कहा था, मैंने अनुशासन के बारे में बात की थी, और मैं उस खंड को छोड़ने से पहले कुछ बिंदु बताना चाहता हूँ। किसी को यह स्वीकार करना चाहिए कि पहली सदी के ईसाई समुदायों में अनुशासन, उन शहरों में जहाँ कम मण्डलियाँ थीं, समकालीन समाज में अनुशासन से अलग है जहाँ मण्डलियाँ सड़क के हर कोने पर मौजूद हैं, खासकर पश्चिम में।

आप देखिए, मैं क्लीवलैंड, टेनेसी में रहता हूँ, और यहाँ की आबादी शायद 40 से 50,000 के बीच है, और आप यकीन नहीं करेंगे कि हमारे शहर में 300 से ज़्यादा चर्च हैं, लगभग 40 से 50,000 300 चर्च। तो, आपके लिए एक साल में एक चर्च, अलग-अलग चर्च में जाना संभव है; साल खत्म होने तक, आप 52 चर्च जा चुके होंगे, और फिर क्लीवलैंड के सभी चर्चों में जाने में आपको छह साल लगेंगे और फिर आप फिर से वहीं लौट आएंगे जहाँ से आपने शुरुआत की थी। लेकिन पॉल के समय ऐसा नहीं था।

यदि आप इफिसस में पौलुस से भागते हैं, तो आप उससे फिलिप्पी में मिलेंगे। यदि आप फिलिप्पी से भागते हैं, तो आप उससे कुरिन्थ में मिलेंगे। यदि आप कुरिन्थ से भागते हैं, तो आप उसी पौलुस से मिलेंगे।

लेकिन इस विशेष अंश से हमें सीखने के लिए कुछ कम महत्वपूर्ण सबक हैं। पहला, चर्च के स्वास्थ्य के लिए अनुशासन आवश्यक है। यह चर्च के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

बहुत से चर्च पाप करने वाले सदस्यों को अनुशासित करने में लापरवाही बरतते हैं। आप देखिए, इस अप्रिय कर्तव्य को अनदेखा करना हमेशा आसान होता है, इस उम्मीद के साथ कि चीजें अपने आप ठीक हो जाएंगी। पौलुस ने ऐसा नहीं किया।

ऐसा नहीं होता। जब ऐसा होता है, तो चर्च भ्रष्ट हो जाता है और परमेश्वर का आशीर्वाद और शक्ति खो देता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है।

दूसरा, पश्चाताप करने वाले भाई या बहन को क्षमा और पुनर्स्थापना प्रदान की जानी चाहिए। जब अनुशासन लागू किया जाता है, और अपराधी अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, तो चर्च को भी उन पश्चाताप करने वालों को क्षमा करने और प्रोत्साहित करने के लिए तत्पर और तत्पर होना चाहिए। सुनिए, चर्च को समुदाय में क्षमा का जीवंत प्रदर्शन होना चाहिए।

तीसरा, लोगों को उनके पिछले पापों की याद दिलाना और उन्हें चर्च के दूसरे दर्जे के सदस्य के रूप में देखना ईसाई प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं है। और फिर भी उन्हें संदेह की दृष्टि से देखना। उन्हें एक नई शुरुआत करने और चर्च के जीवन और सेवकाई में उपयोगी योगदान देने का अवसर दिया जाना चाहिए।

हमें उन्हें परमेश्वर के वचन में बताए गए कामों से ज़्यादा सीमित करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, पौलुस कलीसिया को भरोसा दिलाता है कि वह उन सभी को क्षमा करता है जिन्हें वे क्षमा करते हैं। अब, एक और सबक सीखें।

पॉल कहते हैं, "तुम जिसे क्षमा करते हो, मैं भी उसे क्षमा करता हूँ।" इसलिए, तुम भी क्षमा करो, क्योंकि मैं क्षमा करता हूँ, इसलिए तुम भी क्षमा करो। आप देखिए, पॉल की क्षमा और कुरिन्थियों की क्षमा आपस में जुड़ी हुई हैं।

आप देखिए, पौलुस अपने प्रेरितिक अधिकार का इस्तेमाल कर सकता था और उनसे कह सकता था, मैंने उसे माफ़ कर दिया है। अब, उसे वापस ले लो। वह ऐसा कर सकता था।

चूँकि मैंने उसे माफ़ कर दिया है, इसलिए चाहे आप उसे माफ़ करें या न करें, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। पॉल जानता है कि वह उस मण्डली का हिस्सा है। पॉल विनम्रता के साथ अधिकार का प्रयोग करता है।

यही हम 2 कुरिन्थियों 2, आयत 5-11 में देखते हैं। अधिकार और विनम्रता। याद रखें कि विनम्रता शब्द उस तरह से अच्छा नहीं था, जिस तरह से हम इसे कहते हैं।

प्रारंभिक ईसाई धर्म में यह प्रचलन में नहीं था। मेरा मतलब है, क्योंकि यूनानियों के बीच, अगर आप विनम्र थे, तो आपके पास कोई रीढ़ नहीं थी। विनम्रता कोई गुण नहीं था।

इसे ईसाइयों ने एक सद्गुण बना दिया। ईसाइयों ने ही इसे सद्गुण में बदल दिया, लेकिन यूनानियों के लिए ऐसा नहीं हुआ। पौलुस ने विनम्रता के साथ अधिकार का प्रयोग किया।

फिर पौलुस कुछ कहता है। हमें शैतान की दुष्ट चालों से सावधान रहना चाहिए। ईमानदारी से देखिए कि वह क्या कहता है।

हमें सावधान रहना चाहिए कि हम शैतान के झांसे में न आ जाएँ। पौलुस का इससे क्या मतलब है? कि हमें शैतान के झांसे में नहीं आना चाहिए? खैर, शायद जब हम माफ़ करने से इनकार करते हैं, और यह आदमी निराश और उदास है, और वह अब चर्च में नहीं आना चाहता, तो हो सकता है कि वह फिर से परमेश्वर की बातों में दिलचस्पी न ले, फिर कौन फ़ायदा उठाता है?

शैतान फ़ायदा उठाता है, और राज्य का एक सदस्य शायद खो जाता है। इसलिए, हमें सावधान रहना चाहिए।

पॉल इसका अर्थ नहीं समझाता। हम जानते हैं कि शत्रु उन सभी का फ़ायदा उठाने के लिए बहुत सतर्क है जो मसीह के प्रेम और क्षमा में नहीं चलते। शत्रु हमेशा सतर्क रहता है।

अंत में, पॉल उस दुःख को समझता है जो एक मण्डली को तब महसूस होता है जब कोई सदस्य कोई गलती करता है। आप जानते हैं, दुर्भाग्य से, चर्च कभी-कभी मसीह के मन का प्रदर्शन नहीं करता है। जब कोई इसमें पकड़ा जाता है, तो मैं कहता हूँ, ठीक है, यह उनके लिए सही है।

यह ईसाई रवैया नहीं है। हमने उससे कहा। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं।

यह ईसाई रवैया नहीं है। इससे आपको दुख होना चाहिए। भले ही आपने उसे बताया और उसने फिर भी ऐसा किया, फिर भी आपको खुशी नहीं हुई।

हाँ, मुझे दोषमुक्त किया गया है। मुझे नहीं लगता कि एक आस्तिक के रूप में आप इस तरह का दोषमुक्ति चाहते हैं। हमें यह जानना चाहिए कि जब कोई सदस्य ऐसा करता है तो मण्डली को कैसा दुख होता है, और हमें वास्तव में दुख महसूस करना चाहिए।

उस व्यक्ति को माफ़ करना और उसे फिर से समुदाय में वापस लाना मुश्किल है। इसलिए, यह आज्ञाकारिता की परीक्षा बन जाती है। उस व्यक्ति को माफ़ करना और उसे समुदाय में वापस लाना आज्ञाकारिता की परीक्षा बन जाती है।

हम भाई या बहन के प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करते हैं ताकि हम उन्हें मसीह के पास वापस ला सकें। हम यहाँ सामुदायिक पवित्रता की बात कर रहे हैं। अपराधी की पुनर्स्थापना के रूप में पवित्रता।

बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। देखिए, श्लोक 10 हमें कम से कम यह तर्क देने में मदद करता है कि यह अपराध व्यक्तिगत रूप से एक व्यक्तिगत कार्य था। श्लोक 10 में इसे देखें।

जिसे तुम क्षमा करते हो, मैं भी उसे क्षमा करता हूँ। मैंने जो कुछ भी क्षमा किया है, अगर मैंने कुछ भी क्षमा किया है, तो वह तुम्हारे लिए है। इसका निहितार्थ यह है कि यह पॉल या उसके प्रतिनिधि के खिलाफ़ एक व्यक्तिगत अपमान है।

इसलिए, पॉल कहते हैं, चलो माफ़ करें और चले जाएँ। माफ़ी देना दिलचस्प है। कृपया ध्यान रखें कि माफ़ी मसीह की नज़र में, मसीह की मौजूदगी में की जाती है।

जैसा कि मसीह ने एक गवाह के रूप में देखा, हम मसीह की उपस्थिति में क्षमा करते हैं। मसीह, जिसने हमें क्षमा करने की इच्छा सिखाई, क्षमा के लिए एक शर्त थी। आप इसे मत्ती अध्याय 5, पद 12, पद 14, और मत्ती अध्याय 18, पद 23 से 25 में देखते हैं।

हमें माफ़ करने के लिए तैयार रहना चाहिए। माफ़ी। माफ़ी।

मेरा मतलब है, पॉल यही तर्क दे रहा है। हम इस बारे में बहुत ज़्यादा बात नहीं कर सकते, और आज बहुत से विश्वासी इससे जूझ रहे हैं। लेकिन जब हम ऐसा नहीं करते, तो हम मास्टर रणनीतिकार शैतान के हाथों में खेल जाते हैं, जो कुरिन्थ के चर्च के भीतर कलह पैदा करने पर तुला हुआ था, या तो बड़े पैमाने पर चर्च और असंतुष्ट अल्पसंख्यक के बीच या पश्चाताप करने वाले अपराधी और उसके साथी ईसाइयों के बीच।

इसलिए, जब वह व्यक्ति पश्चाताप कर रहा था, तो उसे क्षमा न करना शैतान के हाथों में खेलना था, जिसने उस व्यक्ति के पाप करने पर पहले ही एक लाभ प्राप्त कर लिया था। हमें सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि एक बिंदु ऐसा आता है जब अनुशासन पूरी तरह से प्रतिशोधात्मक हो सकता है, और पीड़ा की सज़ा किसी को निराशा में डाल सकती है। ईसाई अनुशासन में निश्चित रूप से सज़ा शामिल है जब आवश्यक हो लेकिन प्यार से दी जाती है।

लेकिन ध्यान रखें, प्रतिशोधात्मक या दंडात्मक नहीं बल्कि सुधारात्मक या सुधारात्मक है। इसका उद्देश्य उस व्यक्ति को यह पहचानना है कि उसने क्या किया है। इसका उद्देश्य क्षमा और सुलह के माध्यम से पश्चाताप के बाद उसे बहाल करना है।

अब हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 2 पर जाते हैं। हम अब पद 11 से पढ़ना चाहते हैं। 2 कुरिन्थियों अध्याय 2, पद 11 से शुरू होता है। आप यहाँ देख सकते हैं, पौलुस त्रोआस की ओर अपनी यात्रा जारी रखता है।

2 कुरिन्थियों 2 में, हम आयत 12 और 13 पढ़ना चाहते हैं। जब मैं मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिए त्रोआस में आया, तो प्रभु में मेरे लिए एक द्वार खुला था, लेकिन मेरा मन शांत नहीं हुआ क्योंकि मैंने अपने भाई तीतुस को वहाँ नहीं पाया। इसलिए, मैं उनसे विदा लेकर मकिदुनिया चला गया।

अब, ये दो आयतें अंतिम भाग में आती हैं, जिसमें पौलुस कुरिन्थियों को अपने आचरण के बारे में बताता है। अगर हम उन घटनाओं को फिर से बनाना चाहते हैं जो कठोर पत्र तक ले गईं, तो आइए इसे इस तरह से देखें। तीतुस को आँसूओं का पत्र लेकर कुरिन्थ भेजा गया जबकि पौलुस इफिसुस में और उसके आस-पास घूमता रहा।

इसलिए, वह एशिया प्रांत में कुछ समय और रुका, वह शहर जहाँ वह एक दर्दनाक यात्रा के बाद लौटा था। पौलुस त्रोआस के लिए अपने प्रस्थान के बारे में बात करता है। संभवतः, यह प्रेरितों के काम अध्याय 19 में डेमेट्रियस द्वारा दंगा भड़काने के कारण हुआ था।

जाहिर है, उसने शहर छोड़ने की योजना बनाई थी क्योंकि जब उसने तीतुस को कुरिन्थ भेजा, तो उसने त्रोआस में या कम से कम फिलिप्पी में उससे मिलने की व्यवस्था की। इसलिए, हम सुरक्षित रूप से मान सकते हैं कि पौलुस ने वास्तव में त्रोआस में प्रचार किया था। हालाँकि पद 12 केवल उसके इरादे के बारे में बोलता है, वह पहचान लेगा कि अवसर का द्वार उसके लिए तभी खुला जब उसने प्रभु द्वारा दिए गए सुसमाचार प्रचार के अवसरों को समझा।

तो, उन्होंने कहा कि जब मैं सुसमाचार प्रचार करने के लिए त्रोआस आया था। तो, निश्चित रूप से उन्हें त्रोआस में प्रचार करने का अवसर मिला था। तो यहाँ वह अपनी यात्रा पर चर्चा करते हैं।

वह बताते हैं कि मैसेडोनिया में क्या हुआ। वह मसीह के सुसमाचार के लिए त्रोआस में रुके थे, और उनका स्वागत किया गया, लेकिन तीतुस को न पाकर, उन्हें अपनी आत्मा में शांति नहीं मिली और इसलिए उन्होंने विदा ली। याद रखें, पाठ्यक्रम के पहले परिचय में, हमने कहा था कि 2 कुरिन्थियों, किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक, एक व्यक्ति के रूप में पॉल की मानवता को दर्शाता है, पॉल के दिल में एक खिड़की है।

सुनो, जो व्यक्ति परमेश्वर की शांति के बारे में बात करता है जो समझ से परे है, वह तुम्हारे हृदय को स्थिर करेगा। वही व्यक्ति कहता है कि तीतुस के कारण मैं अपनी आत्मा में शांति नहीं पा सका। आप आश्चर्य करते हैं कि क्यों? क्योंकि तीतुस वापस नहीं आया था, और वह नहीं जानता था कि कुरिन्थ के लोग उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया करेंगे।

क्या वे उसे स्वीकार करने वाले थे? क्या वे उसे अस्वीकार करने वाले थे? क्या वे उसके साथ कुछ गलत करने वाले थे? उसने कहा कि मेरी आत्मा में शांति नहीं थी। यह प्रेम है। हमारे यहाँ अफ्रीका में एक कहावत है कि जब कोई आपका बच्चा नहीं होता है, तो आप उसे किसी काम से संदेश भेज सकते हैं और कह सकते हैं, आपको आज रात वापस आना होगा।

जब कोई आपका बच्चा नहीं होता है, तो आप उसे किसी काम से भेजते हैं और कहते हैं कि तुम्हें आज रात हर हाल में वापस आना है। लेकिन जब कोई आपका बच्चा होता है, तो आप कहते हैं कि अब तुम जा रहे हो, अगर अंधेरा हो गया है तो कृपया यहीं रुक जाओ और कल आ जाओ। तुम रात भर रुक सकते हो और कल आ सकते हो।

लेकिन जब वह आपका बच्चा नहीं होता, तो आप कहते हैं कि चाहे अंधेरा हो या न हो, आज रात आ जाओ। लेकिन अगर वह आपका अपना बच्चा होता है, तो आप कहते हैं कि अगर अंधेरा हो रहा है, तो मैं आपकी जान को खतरे में नहीं डालना चाहता, रात भर साथ रहूँ, कल आ जाओ। क्या आप दोनों के बीच अंतर देख सकते हैं? यहाँ पॉल है।

उसने कहा कि मुझे अपनी आत्मा में कोई शांति नहीं मिलती क्योंकि मुझे दशमांश नहीं मिला। यह हमें पॉल के दिल में एक खिड़की प्रदान करता है। मेरा मतलब है, यह पॉल के दिमाग में जाता है क्योंकि एनआरएसवी इसका अनुवाद करता है।

उसका मन शांत नहीं हो पा रहा था। यानी, उसे कुरिन्थ के आध्यात्मिक बच्चों के लिए आशाओं और आशंकाओं से अपनी आत्मा में कोई राहत नहीं मिली। सच में, पौलुस अपने दिल में कुरिन्थियों को लेकर चल रहा था। हालाँकि उसके पास हमें प्रचार करने का अवसर था, लेकिन वह अपनी आत्मा में इतना बेचैन था कि अपनी सेवा पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था।

उनका सबसे बड़ा विचार कुरिन्थियों और तीतुस के साथ था। क्या वे फिर से उसके अधिकार को अस्वीकार करेंगे, या वे उसकी बात सुनेंगे और वही करेंगे जो उसने लिखा था? पॉल कितना सच्चा

पादरी था। उसे परमेश्वर के लोगों से सच्चा प्यार था, और परमेश्वर ने उसकी देखभाल करने का वचन दिया है, और हमें यह जानने की ज़रूरत है।

सुनिए, हमने कहा कि यह एक पादरी पत्र है जो हमें सिखाता है कि अच्छे पादरी कैसे बनें। सुसमाचार के हर सेवक को ऐसे प्रेम और चिंता से विवश होना चाहिए। हमें लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम को अपनी प्रेरणा बनाने की आवश्यकता है।

मुझे यकीन है कि आपने पहले भी सुना होगा कि कुछ लोग कहेंगे, मुझे मंत्रालय से प्यार है, वे लोग हैं जिन्हें मैं प्यार नहीं करता। मुझे मंत्रालय से प्यार है, वे लोग हैं जिन्हें मैं प्यार नहीं करता। ठीक है, मंत्रालय क्या है, तो कुर्सीयाँ और माइक्रोफोन? यदि आप मंत्रालय से प्यार करते हैं, तो इसका मतलब है कि आप परमेश्वर के लोगों से प्यार करते हैं।

मेरा मतलब है कि नीतिवचन 25 25 कहता है कि प्यासे जीव के लिए ठंडा पानी है। तो, यह दूर देश से अच्छी खबर है। तो, टाइटस की रिपोर्ट अच्छी थी।

पद 14, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में हमें सदैव विजय जुलूस में ले जाता है और हमारे द्वारा हर जगह उसे जानने से आने वाली सुगंध फैलाता है। क्योंकि हम उद्धार पाने वालों और नाश होने वालों के बीच परमेश्वर के लिए मसीह की सुगंध हैं। तीतुस ने जो सुसमाचार उसके पास लाया, उससे प्रशंसा की लहर उठी।

भगवान का शुक्र है। प्रेरित अपनी सेवकाई की तुलना एक बंदी से करता है जिसे विजयी सेनापति के विजय जुलूस में ले जाया जाता है। अब विद्वानों ने इस बात पर बहस की है कि यहाँ किसका नेतृत्व किया जा रहा है।

क्या यह पॉल ही है जो बंदी है और इस पर कई बहसें हैं। लेकिन यह मान लेना सुरक्षित है कि पॉल के मन में रोमन विजयी परेड की एक स्पष्ट तस्वीर थी, जिसमें एक जनरल आगे चल रहा था और वह खुद को विजयी जनरल के एक सैनिक के रूप में देखता था जो उसकी जीत में हिस्सा ले रहा था। पॉल के लिए, ईश्वर विजयी जनरल था जो जुलूस के सबसे आगे था।

पौलुस ने जहाँ भी पहुँचा, वहाँ मसीह के सुसमाचार की खुशबू फैलाई। फिर, पद 16 में, वह अपनी सेवकाई की तुलना ऐसे जुलूसों के दौरान हवा में भरी खुशबू से करता है। सुसमाचार उन लोगों के लिए जीवन की खुशबू है जो बचाए जा रहे हैं और उन लोगों के लिए मृत्यु की खुशबू है जो नाश हो रहे हैं।

क्या आप जानते हैं कि यह श्लोक हमें क्या सिखाता है? यह हमें सुसमाचार संदेश के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के महत्व को सिखाता है या दिखाता है। शायद हम सभी किसी ऐसे व्यक्ति, रिश्तेदार या पड़ोसी के बारे में सोच सकते हैं, जो अपने खास इत्र के लिए जाना जाता है। जिस क्षण वह जाता है और कहता है कि ओह हाँ, आंटी फलां यहाँ इसलिए हैं क्योंकि उनके पास एक खास इत्र है।

तुम्हें पता है। आंटी फलां यहाँ हैं। उन्हें देखे बिना भी हम जानते हैं कि वे आस-पास ही हैं।

बिना एक भी शब्द बोले, हमारी खुशबू कंपनी में फैल जाती है, जैसे तेल के टूटे हुए अलबास्टर बॉक्स से आती है। मैं कहता हूँ ओह हाँ, आंटी फलां, और आप इसे कभी मिस नहीं करेंगे। निश्चित रूप से, वह कोने के आसपास है।

हर ईसाई को एक खास तरह का इत्र लगाने के लिए भी जाना जाना चाहिए: एक ऐसा इत्र जो मसीह की खुशबू वाला हो। लेकिन सुनिए, इसे कॉस्मेटिक काउंटर पर नहीं खरीदा जा सकता या चर्च में नहीं बेचा जा सकता।

यह हमेशा और केवल मसीह के साथ घनिष्ठ संबंध से ही उभरता है। बहुत असंभव। बल्कि बहुत महत्वपूर्ण।

यह हमेशा और केवल मसीह के साथ घनिष्ठ संबंध से ही उभरता है और निश्चित रूप से, सूक्ष्म लेकिन ध्यान देने योग्य है। मुझे जॉन फ्लेचर की कहानी याद है, जिसे ज्वलंत फ्लेचर कहा जाता था। जॉन फ्लेचर, वह महान पवित्रता उपदेशक।

एक कहानी है कि एक दिन वह सड़क से गुज़र रहा था और युवा यीशु सड़क पर चलते हुए जॉन फ्लेचर को गलत समझ रहा था: उसकी विनम्रता, उसकी खुशबू। अब, हमें खुद से पूछने की ज़रूरत है।

हम कौन सी खुशबू फैला रहे हैं? किसी ने एक छोटे से शहर में रहने वाले एक ईसाई के बारे में कहा। सुनिए वह क्या कहता है। वह आदमी कभी भी मेरे रास्ते में नहीं आता, इससे मुझे कोई फायदा नहीं होता।

वह आदमी कभी भी मेरे रास्ते से नहीं गुजरता, इससे मुझे बेहतर महसूस होता है। इसका मतलब है कि जब भी यह आदमी मेरे रास्ते से गुजरेगा, मैं एक बेहतर इंसान बन जाऊँगी। जब भी वह मुझसे बात करेगा, मैं एक बेहतर इंसान बन जाऊँगी।

एक अन्य व्यक्ति ने उसी व्यक्ति के बारे में कहा। आपको केवल उसका हाथ मिलाने की ज़रूरत है, यह जानने के लिए कि वह ईश्वर से भरा हुआ है। आपको केवल उसका हाथ मिलाने की ज़रूरत है, यह जानने के लिए कि वह ईश्वर से भरा हुआ है।

क्या गवाही है। ऐसी सेवकाई कितनी अविश्वसनीय कार्य है। आप जानते हैं कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं? हम दुख के माध्यम से जीत के बारे में बात कर रहे हैं।

दुख के माध्यम से विजय। कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस यह सवाल पूछ सकता है, इन बातों के लिए कौन पर्याप्त है? इन बातों के लिए कौन पर्याप्त है? आइए इसे फिर से पद 15 से पढ़ें। क्योंकि हम उद्धार पाने वालों और नाश होने वालों के बीच परमेश्वर के लिए मसीह की सुगंध हैं।

एक के लिए, यह मृत्यु से मृत्यु तक की सुगंध है। दूसरे के लिए, यह जीवन से जीवन तक की सुगंध है। फिर उसने पूछा कि इन चीजों के लिए कौन पर्याप्त है? दूसरे शब्दों में, हम यह कैसे कर सकते हैं? सुनो।

यहीं पर परमेश्वर का अनुग्रह आता है। अनुग्रह के बारे में पौलुस का दृष्टिकोण बहुत मजबूत है। पौलुस के लिए, अनुग्रह शक्तिशाली है।

ईश्वर की कृपा हमें बदल देती है। ऐसा नहीं है कि हम सिर्फ अनुग्रह की बात करते हैं। अब, जब हम अनुग्रह के बारे में बात करते हैं, तो हम गैर-जिम्मेदार अनुग्रह के बारे में बात कर रहे होते हैं, गैर-जिम्मेदार अनुग्रह के बारे में नहीं।

हम गैर-जिम्मेदार अनुग्रह के बारे में बात कर रहे हैं। वह अनुग्रह जो आपके जीवन को बदल देता है और आपकी मदद करता है और हमारी मदद करता है और हमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए मजबूत बनाता है। हम परमेश्वर की इच्छा को परमेश्वर की कृपा के बिना पूरा नहीं कर सकते।

हम यह सुगंध नहीं बन सकते। हम अपने जीवन में परमेश्वर की सुगंध के बिना हर किसी के लिए आशीर्वाद नहीं बन सकते। आप देखिए, परमेश्वर हमें विजय दिलाता है।

पॉल बहुत स्पष्ट है। फिर वह कहता है, इन कामों के लिए कौन पर्याप्त है? इस कार्य के बराबर कौन है? कौन इसे कर सकता है? मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने का कार्य। मसीह की सुगंध बनने का कार्य।

बाद में कहेगा कि हम सुसमाचार के विक्रेता नहीं हैं। हम प्रेरित हैं। हम शुद्ध संदेश के विक्रेता नहीं हैं, या वह कह सकता है कि कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने संसाधनों पर निर्भर करता है।

मुझे लगता है कि अध्याय 3 में एक और उत्तर देखने को मिलेगा, कि अगर हम अपने संसाधनों पर निर्भर हैं तो हम पर्याप्त नहीं हैं। और फिर वह श्लोक 17 में आगे कहता है। अब श्लोक 17 को देखें।

यहाँ, वह पद 17 में कहता है, क्योंकि हम बहुत नहीं हैं। हम परमेश्वर के वचन के बहुत से विक्रेताओं की तरह नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की दृष्टि में परमेश्वर द्वारा नियुक्त ईमानदारी के लोगों के रूप में, हम मसीह में बोलते हैं।

मुझे यकीन है कि आपने पहले भी फेरीवालों को देखा होगा। ये लोग ट्रैफ़िक जाम होने पर अपना सामान बेचते हैं। मेरा मतलब है, आप इसे नाइजीरिया के लागोस में देख सकते हैं।

आप इसे फिलीपींस के मनीला की सड़कों पर देख सकते हैं। आप इसे कई जगहों पर देख सकते हैं, यहाँ तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका में भी कुछ जगहों पर। आप देखते हैं कि जब ट्रैफ़िक बढ़ जाता है तो रेहड़ी-पटरी वाले इधर-उधर भागते हैं।

वे आपके इर्द-गिर्द घूमते हैं। वे भागते हैं, और वे चाहते हैं कि आप खरीदें। पॉल कहते हैं नहीं, हम भी बहुतों की तरह हैं।

बहुत से लोग शायद कई घुमक्कड़ शिक्षकों और दार्शनिकों का उल्लेख कर रहे हैं। आप जानते हैं कि पहली सदी में हमारे पास बहुत से घुमक्कड़ शिक्षक और दार्शनिक हैं। उनमें से कुछ निंदक भी हैं।

वे बस इधर-उधर घूमते रहते हैं। और ये लोग उस चीज़ के लिए पैसे की उम्मीद करते हैं और मांग करते हैं जिसका दावा वे ईश्वर का वचन होने का करते हैं। वे इसके लिए पैसे चाहते हैं।

कुछ लोग। या शायद वे विरोधी थे। वे कुछ लोगों की तरह नहीं थे।

और इस तरह पॉल प्रकट होता है। वह अपने इरादों की ईमानदारी की अपील करता है। वह अपने इरादों की ईमानदारी और अपने संदेश की शुद्धता की अपील करता है।

अब आपको कुछ मिल गया है। उद्देश्य और संदेश। आपका संदेश और उद्देश्य एक साथ चलते हैं।

हम जो प्रचार करते हैं, वह क्यों करते हैं? हमें अपनी प्रेरणा की जाँच करनी चाहिए। सेवकाई के लिए प्रेरणा। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

याद रखें, हम एक प्रामाणिक सेवकाई के लक्षणों के बारे में बात करने जा रहे हैं, जिसे हम अध्याय 3 में देखेंगे। लेकिन पौलुस पहले ही संकेत दे रहा है कि वह कहाँ जा रहा है। उसने कहा कि हम उन लोगों की तरह नहीं हैं जो परमेश्वर के वचन को बेचते हैं। हम फेरीवाले नहीं हैं।

लेकिन ईमानदारी के आदमी के रूप में। यहाँ हम फिर से आते हैं। पॉल ईमानदारी के बारे में बात कर रहा है।

जैसा कि परमेश्वर द्वारा आदेश दिया गया है। याद कीजिए कि जब हम 2 कुरिन्थियों अध्याय 1, पद 1 के बारे में बात कर रहे थे, तो हमने यही कहा था? उन्होंने कहा कि जैसा कि परमेश्वर द्वारा आदेश दिया गया है। परमेश्वर की दृष्टि में हम मसीह में बोलते हैं।

हमने अध्याय 2 में काफी कुछ सीखा है। हमने अनुशासन के बारे में सीखा है। हमने क्षमा के बारे में सीखा है। हमने पादरी संवेदनशीलता के बारे में सीखा है।

हमने सीखा है कि जब लोग अनुशासित होते हैं तो उनके साथ कैसे पेश आना चाहिए और उन्हें कैसे अनुशासित करना चाहिए। हमने टकराव के बारे में बात की है। कभी-कभी टकराव ज़रूरी होता है, लेकिन हमें ऐसा प्यार से करना चाहिए।

सुसमाचार के सेवकों और मसीही पथिकों के रूप में, हम जो कुछ भी करते हैं, वह मसीह के प्रेम से प्रेरित होना चाहिए। और हमें स्वयं भी ईमानदार लोग होना चाहिए। और यह मत भूलिए कि 2 कुरिन्थियों में पुनर्स्थापना की सेवकाई के बारे में बात की गई है।

चर्च लोगों को बाहर निकालने में बहुत तेज है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें चर्च को एक अस्पताल के रूप में समझना चाहिए जहाँ लोग आते हैं, बीमार लोग आते हैं, जहाँ उन्हें उपचार मिलता है, जहाँ उन्हें क्षमा मिलती है और यह सब। वैसे, क्या आपने कभी सोचा है कि बीमार लोगों को मरीज़ क्यों कहा जाता है? मुझे पक्का नहीं पता, लेकिन हम उन्हें मरीज़ कहते हैं।

शायद इसलिए क्योंकि उन्हें सबसे ज़्यादा धैर्य की ज़रूरत होती है। शायद यही वजह है कि हम उन्हें मरीज़ कहते हैं क्योंकि उन्हें धैर्य की ज़रूरत होती है। जब उन्हें धैर्य की ज़रूरत होती है, तो हमें उनके साथ सहनशील होना पड़ता है।

यही बात तब भी लागू होती है जब कोई व्यक्ति सुसमाचार के लिए पूछता है, हमें यह सुनिश्चित करने में सक्षम होना चाहिए कि हम उनके साथ धैर्य रखें और हमारा लक्ष्य उनकी पुनर्स्थापना हो।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर उनके शिक्षण में कही गई बात है। यह सत्र 3, 2 कुरिन्थियों 2, पॉल का बचाव है।